अमिट स्मृति

रचनाकार - श्री ब्रजेन्द्र सिंह
द्वारा दादाजी महाराज
हुजूरी भवन, पीपल मन्डी
आगरा - २८२ ००३
दिनांकः २६ सितम्बर, १९९८

दादाजी की अमृतबानी से सुनी हम तवारीख़-ए-हुजूरे दरबार पूरे दो सौ साल की ।
जीव की काल पर विजय कराई यह भी बेमिशाल कहानी इस दरबार की ।। १ ।।
करोड़न जीव तराई गौन अभ्यास करा के ।
भेंटें यहाँ चढ़ती त्याग और बलिदान की ।। २ ।।
हे दादा प्यारे ! अजब तेरी महिमा गजब तेरे खेल ।
लीला तुम्हरी समझ न सके हम सब हो गये फेल ।। ३ ।।
उच्च शिक्षा में दक्षता हासिल कर मर्जी पूरी करी पापा की ।
वक्त तभी से रटन लगाई भैया अचिन्त ने निज घर जाने की ।। ४ ।।
पापा ! यह दुनिया फानी है, हमे अब ही दो निज घर पहुँचा ।
पापा राखन चाहें धरातल नीचा, वह उड़ना चाहें देश ऊँचा ।। ५ ।।
कसमकस इसी में बीत गये बरस सतारा ।
राज पाट छोड़ कोटा ते चले आये गुरुद्वारा ।। ६ ।।
मौज कुछ पलटन लागी हुये दादाजी महाराज अति गंभीर ।
घोर मंत्रणा भई अन्तर में, राधास्वामी प्रार्थना करी भैया की मंजूर।। ७ ।।
या विधि निर्णय हक में अपने करा लिया ।
प्रेमियों ने भी यही आभास जहाँ तहाँ पा लिया ।। ८ ।।

दादाजी बोलेः
“मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है तोर ।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागेगा मौर ।।”
जून तिथि तीस, सैन बैन में समझाई दादाजी महाराज आगे की लीला अपार ।
बचन बारीकी ना समझी हुये हम सब बे विचार ।। ९ ।।
दिन तीन सतगुरु संग अभ्यास बैठ, भैया कारज अपना बनवा लिया ।
उठ भजन बोले भैया सतगुरु से मैंने पूरा तुम्हें पहिचान लिया ।। १० ।।

प्रेम पत्र क्या पढ़ूँ, सब कुछ तो दिखा दिया ।
मन पीस पीस चरनों में लगा लिया ।। ११ ।।
ना काहू से लगाव ना काहू से दुराव, भैया ने दुआयें मांगी पापा से सबन की हर बार ।
और कहें वक्त गुरू से करना गहरा (अंतर) प्यार,
उनके बिना नहीं होगा तुम्हरा पूरा उद्धार ।। १२ ।।
मुक्ता दो सुमिर–सलोनी सौंपे पापा को, करने उनकी साज सवांर ।
पूरी दीं हिदायतें उनको जिससे बाबाजी की करें वह पक्की देख भार ।। १३ ।।
भैया ने बच्चों को पढ़ायाः
We are the beggars of Satguru Radhasoami Dayal !
(सतगुरू राधास्वामी दयाल के हम भिखारी !)
भैया ने प्रतिज्ञा यही दादाजी सन्मुख बेटे सुमिर से कराई ।
ऐसे भरम हमारा दादाजी और राधास्वामी बीच मिटाई ।। १४ ।।
धाम तिथि जाने की मुकर्रिर कर मोहि नादान को समझाये कुछ शब्द सार ।
बात बात में समझा गये भविष्य की लीला सार ।। १५ ।।
सब की सुनी, सबसे कहा और सबका देखा बुद्धि बिलास ।
चलते चलते बता गये सबका पूरा इतिहास ।। १६ ।।
औघट रूप धरवा अचिंत भैया विचित्र ढंग रचवा लिया ।
समझ सकें ना हम ताही से ऐसा रूप धरवा लिया ।। १७ ।।
देखो ! देखो ! भजन पूर्व गुरू प्यारे की चरनियाँ हिम सम हो रही,
मौज की धार एक विरत होय स्वामी से मिलने जा रही ।। १८ ।।
वाही समय तीन बार छिड़क छिड़क जल परसादी मोपै,
भैया अचिन्त के निज घर जाने का, मानो गुप्त संकेत दिया जा रहा ।। १९ ।।
“गुरू उल्टी बात बताई मूरखता खूब सिखाई”
माह जुलाई पहली अठ्ठानवे सायं बैठे दादाजी महाराज भजन में ।
वाहि मुकर्रिर समय सुरत चढ़वाई भैया अचिन्त ने ।। २० ।।
यह मन मूरख समझा नहीं अपने सतगुरू की उल्टी अचरजी लीला ।
तीस मिनट के उसी भजन में गुरू गुरूमुख खेल खेल लिया अजूबा ।। २१ ।।
सत्तलोक हलचल मची, ब्रहमाण्ड लागा कांपन, धरा सिमटी,
नगर आगरा हुआ सुन्न, जनमानस गुरू द्वारे पड़े टूटे ।
दादाजी महाराज हुये बेहद गंभीर, माता स्तब्ध, अभ्यासी घुटे,
प्रेमीजन टूटे, सतसंगियन धीरज बंधे फूटे ।। २२ ।।
“जा विधि राखें उस विधि रहना, शुकर की करना समझ विचार ।।”

दादाजी भाखा ! जो हुआ उसमें हुजूर से शिकवा शिकायत हमरे कुछ नाहीं,
चुप रह हम साहेब मौज विचारी ।
ताते तुम भी सब धीरज धर गुरू मौज निहार शान्त रहोरी ।। २३ ।।
अब गुरू (दादाजी महाराज) निकारें मन के विकार और समझावें हेला मारि मारि ।
दृष्टि मेरी से देखो, श्रवण मेरे से सुनो,
बोली मेरी में बोल, आपा अपना पटक डारि ।। २४ ।।
कहानी खत्म न हुई यहाँ, अरे पिता पुत्र के रिस्ते को नापो तोलो तो जमीं पर यहाँ ।
वह तो दूध और पानी छांटि छांटि कठिन परीक्षा करावें यहाँ ।। २५ ।।
बड़े बड़े जोगी जती विचारक देखे हमने, कठिन परीक्षा में धीरज टूटें उनके ।
रोवें चीखें चिल्लायें और कोरे उपदेश मिलें धूल में उनके ।। २६ ।।
आओ तुम्हें सुनायें दिखायें लीला हुजूरी दरबार की,
पाखंड दंभ यहाँ नहीं समझायें हरदम समदम की ।
मानो वहाँ रह भक्ति करो अपने सतगुरू की,
नहीं मानो तो राह पकड़ो उसी काल नगर की ।। २७ ।।
है कोई शूरवान ! सामने आये ! जो चढ़ावे भेंट अपने प्यारे सुकुमार की ।
तन मन धन क्या? सौ साले हुजूरी पर उन कमाई चढ़ाई पूरे अरसठ साल की ।। २८ ।।
किन नाजों से पाला पोशा किन कोमल हाथों से संवारा,
किस गुदड़ी में छिपा कर रक्खा, नजर न लगे अनाधिकारियों की ।। २६ ।।
बालपने में भैया पापा जैसा बाना पहनन की जिद गावें ।
पापा जैसी धार पोशाक छवि में पापा जैसा बन जावें ।। ३० ।।
एक भरोसा पापा का राखें, पापा छोड़ कहीं नहीं जावें ।
दुनिया की हालत पर ना तोई चैन, न मोई चैन,
करत-२ विचार मंथन फिर पापा मय हो जावें ।। ३१ ।।
परिवार का धागा एक सूत में बाँध, सतसंगियन की प्रीत खूब दृढ़ाई ।
खुद तो कुछ नहीं चाहा पर औरन को पापा से भरपूर दिलवाई ।। ३२ ।।
यथा नाम तथा काम चरितार्थ कर रहनी भी सादा दर्शाई ।
बड़े बड़े लोगन का संग त्याग दीन हीन पर प्रेम दिखाई ।। ३३ ।।
असंख्यन की भीड़ में कोईजन आय, दादाजी का मुखड़ा ताकें काई ललाट निहारें ।
भूले भरमे - भौचक्के बने, देख नूर मुनव्वर चेहरा भैया का हैरत करें ।। ३४ ।।
अंतिम दर्शन तक सतगुरू को झाकें, कोई हाव भाव उनके चेहरे का देखें ।
कोई दुखती रग अपने हिये में पेखें, कोई उन नैनन नीर निहारें ।। ३५ ।।

अरे ना समझो ! नैन समुद्र तो वे अपने संग ले गये,
यहाँ तो छोड़ गये पापा के पास सत्त अमर कहानी ।
पिता होइ पुत्र का फर्ज निभायें,
क्या ऐसी देखी सुनी है दुनिया में जीवन्त कहानी ।। ३६ ।।
ब्रजेन्द्र बाबला विषाद में जमुना तट खड़ा खड़ा अंदर बाहर झांकता रहा ।
और अचंभी लीला अपने सतगुरू प्यारे की हर पल हिये में बसाता रहा ।। ३७ ।।
और फर्माया - अब अचिन्त को जो देखन चाहे, मेरे नैनों की आभा में झाँकले ।
प्यार जो देना चाहे वह प्यार मेरी (दादाजी महाराज) भाषा समझ उसी पर उढ़ेल ले ।। ३८ ।।
यही है प्यार की भाषा मेरे प्यारे समझ ले,
अंतर में अपने इसी इशरे को धर ले ।। ३९ ।।
मौज समझ काहु-२ को सुरक्षा चक्र में बाँधि दादाजी चित निज चरनन में मुड़ा लिया,
काहु-२ की भंगार निकाल सन्मुख सबके ला खड़ा करा लिया ।। ४० ।।
कथनी करनी दादाजी भेद मिटाई, दुनिया में संतन रीत दृढ़ाई,
पारस होय जो चरनन लागे ताकी सच्ची मुक्ति कराई ।। ४१ ।।
अरे ! दादाजी जैसे प्यारे प्यारे सतगुरू फिर न मिलेगें,
ताते सब बन्धन त्याग इन ही प्रीत करो करारी ।। ४२ ।।
बड़ी किस्मत सौं मिले हो, हे ! मेरे दादा दयाल ।
दया तुम्हें हम पर छिन छिन आवे, हे ! मेरे प्रेम दयाल ।। ४३ ।।
जीव कल्यान पर उतारू ऐसे जहाँ तहाँ झपट्टा मारि, नैन सों खैंचे जीव जन-समारोह से ।
धाम अनामी से पाप कुंड तक धुन राधास्वामी लगवावें आम और खास से ।। ४४ ।।
भक्ति भाव हमरी बिके कैड़ियों में रैन दिवस सारे ।
चैरासी में पिस पिस हम तो हो गये थे बेहाल सारे के सारे ।। ४५ ।।
शेख चिल्ली बन फिर भी मेल मिलायें अकल सकल में आपसे ।
(फिर भी) नीचता (दुष्टता) का ख्याल न कर चुकता काल का करें बही खाते अपने से ।। ४६ ।।
सत्य सत्य कहानी हम यह बताई ।
छिपायें तो गुरू के गुनहगार भाई ।। ४७ ।।

दादाजी हमें चिताई -
भयंकर संक्रामक रोग है संग दोष, बहु नजदीकी संग ते यह तो लागे री ।
जा प्रकोप ते डांवाडोल होय सतसंगी, ख्वारी परमार्थ में करावें भारी ।। १ ।।
उपकार भूलि सतगुरू का, वह तो उल्टा दोष उन्हीं पै मढ़ता जाता री ।
चक्कर कुसंग के, कोई खोवे गुरू का संग वर्षों, कोई-२ त्यागे देह सारी ।। २ ।।
मोह बस अपना पराया ढूँढ़ें, समय परे अपनों से ही खावें झकझोरा ।
दुनियादारी कहीं और न ढूढ़, बगल में बैठी है, जैसे बगल में छोरा नगर में ढिढ़ोरा ।। ३ ।।
निदान जा रोग का बचनों में दादाजी समझाई, कुसंग छोड़ गुरू आज्ञा पूरी मान,
प्रीत प्रतीत चरनों में गाढ़ो नियारी ।
तब निर्मलता आवे, विरह जागे, भक्ती में कदम-२ बढ़ता जावे पियारी ।। ४ ।।